नाटकीकरण का अर्थ है—कुछ विशेष किस्म के प्रकरणों या प्रसंगों को पढ़ाते समय वास्तविक कक्षागति स्थिति में अनुरूपित परिस्थिति का प्रयोग। इस कौशल के प्रयोग से अध्यापक विद्यार्थियों को, प्रकल्पित रूप में ही सही एवं वास्तविक स्थिति में ले जाता है, जिससे विद्यार्थी अपनी कक्षा में रहते हुए भी वास्तविक स्थिति का अनुभव कर लेते हैं। यह कुशलता बच्चे को पढ़ाने, सीखने के लिए मनोवैज्ञानिक रूप से और संवेगात्मक रूप से तैयार कर देता है, और यह बच्चे को सीखी गई विषयवस्तु को हृदयंगम करने में भी सहायता देता है। इसके अलावा, यह कुशलता बच्चे को अभिप्रेरणात्मक स्तर को बनाए रखने में भी सहायता देती है। यह अध्यापक द्वारा प्रशिक्षण तथा अभ्यास के द्वारा अर्जित की जा सकती है।

नीचे के अनुच्छेदों में नाटकीकरण की कुशलता के अर्थ, प्रयोजनों और घटकों का विवेचन करने का प्रयत्न किया जाएगा।

कौशल की परिभाषा (Definition of Skill)

जब हम अनुरूपण की क्रिया के द्वारा किसी घटना की पुनरावृत्ति करते हैं तो हम इस क्रिया को नाटकीकरण कहते हैं। इस कुशलता का प्रयोग करते समय, भिन्न-भिन्न व्यक्तियों को अलग-अलग भूमिकाएँ अदा करने के लिए सौंपी जाती हैं। ये व्यक्ति अपने आपको ठीक उन जैसी परिस्थितियों में प्रस्तुत करते हैं जिन परिस्थितियों में उन्हें अपनी भूमिका अदा करनी होती है वे वही प्रतिक्रियाएँ दर्शाते हैं और वैसे ही अनुभवों से गुजरते हैं जैसा कि वास्तव में हुआ था।

नाटकीकरण का प्रयोजन (Purpose of Dramatization)

यह कौशल दो तरह से काम करता है, एक तो यह मनोरंजन करता है और दूसरे यह विद्यार्थियों या श्रोताओं की पढ़ाई में योगदान देता है।

कौशलों के घटक (Components of the Skill)

नाटकीकरण के कौशल में कई कार्यकलाप हैं, जैसे—(i) परिस्थितियों को उपयुक्त बनाना, (ii) संवाद का प्रयोग करना, (iii) वार्तालाप की भाषा का प्रयोग करना, (iv) शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना, (v) भूमिका के साथ तादात्म्य स्थापित करना, और (vi) भूमिका के सम्बन्ध में जागरूकता बनाए रखना।

(i) स्थिति की उपयुक्तता (Appropriateness of Situations)—नाटकीकरण के कौशल का प्रयोग किसी भी स्थिति में अबाध रूप से नहीं किया जा सकता। कुछ विशेष परिस्थितियों में ही इस कौशल का उपयोग प्रभावकारी ढंग से किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, युद्ध के दृश्य का नाटकीकरण करते समय, इस कौशल के प्रयोगकर्ता को अपनी वाणी और हाव-भाव को युद्ध की स्थिति के अनुरूप बनाना होगा और उसी के अनुसार उसके चेहरे पर भी वैसे ही भाव व्यक्त होने चाहिए। ऐसी

स्थिति में नासिक्य ध्वनियों का उच्चारण मज़ा किरकिरा कर देगा और इस प्रकार इस कुशलता की प्रभावकारिता नष्ट हो जाएगी।

(ii) संवाद का प्रयोग (Use of Dialogues)—वाणी और स्वर हाव-भाव के साथ तालमेल बैठाकर बोले गए संवाद, मुद्रित या लिखित शब्दों में प्राण फूँक देते हैं। संवाद में प्रयुक्त भाषा विद्यार्थियों/श्रोताओं की परिपक्वता के स्तर के अनुसार होनी चाहिए।

(iii) वार्तालाप की भाषा (Conversatonal Language)—संवादों में प्रयुक्त भाषा साहित्यिक नहीं होनी चाहिए। इसमें स्थानीय बातचीत में प्रयोग किए जाने वाले शब्द और स्थानीय बोली के शब्द भी होने चाहिए। ऐसी भाषा सभी लोगों को आसानी से समझने योग्य होगी। इसके अलावा, ऐसी भाषा को लोग सरलता से समझ सकेंगे और उसे हृदयंगम कर सकेंगे। दूसरी ओर, अधिकांश श्रोता साहित्यिक भाषा को पसन्द नहीं करेंगे और वे उससे उकता जाएँगे।

(iv) शब्दोच्चारण की शुद्धता (Correctness of the Pronunciation of Words)—नाटकीकरण की कुशलता में उच्चारण की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। गलत उच्चारण से विद्यार्थी या श्रोता पर प्रभावकारिता नष्ट हो जायेगी। दूसरा उल्लेखनीय कारक है कंठस्वर की स्पष्टता। वाणी में कोई भी दोष, जैसे भाषणबाजी, अनुनासिकता आदि नहीं होने चाहिए, अन्यथा इस कुशलता की मूल भावना ही लुप्त हो जाएगी।

(v) भूमिका के साथ तादात्म्य (Identification with the Role)—इस कौशल का उपयोग करने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह उसे सौंपी गई भूमिका के साथ अपना तादात्म्य स्थापित कर ले। इससे उसकी भूमिका वास्तविकता के अधिक पास पहुँच जाएगी। उसका व्यवहार, उसकी वेशभूषा, साज-सज्जा, प्रतिक्रियाएँ और मुख मुद्राएँ आदि भूमिका के अनुसार ही होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई व्यक्ति राजा की भूमिका अदा कर रहा हो तो उसकी वेशभूषा, बातचीत का ढंग, हाव-भाव, प्रतिक्रियाएँ आदि राजा जैसी ही होनी चाहिए। ऐसा न होने पर उसकी भूमिका की सारी सुन्दरता बिगड़ जाएगी।

(vi) भूमिका के प्रति जागरूकता (Consciousness regarding Role)—अभिनेता या अध्यापक को अपनी भूमिका के बारे में बहुत जागरूक रहना चाहिए। उसे स्थिति के अनुसार ही कंठस्वर और हाव-भाव का प्रयोग करना चाहिए। उसके द्वारा प्रस्तुत सभी कार्यकलाप स्थिति के अनुकूल होने चाहिए। इससे उसकी भूमिका की प्रभावकारिता बढ़ जाएगी। दूसरे शब्दों में, अभिनेता/अध्यापक स्वयं को प्रकाचित रूप से वास्तविक परिस्थितियों में रखें, तभी उसकी प्रतिक्रियाएँ वास्तविकतापूर्ण हो सकेंगी।